

तेलंगाना में मलि इक्ष्वाकु काल के सक्िके

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

हाल ही में तेलंगाना के पुरातत्त्व विभाग ने हैदराबाद से 110 कमी दूर स्थिति परसदिध **बौद्ध वरिसत स्थल फणीगरी** में एक मटिटी के बरतन में 3,730 **सीसे के सक्िके** के भंडार की खोज की।

उत्खनन के नषिकर्ष क्या हैं?

■ हालिया उत्खनन:

- **सबसे दक्षिणी मठ कक्ष (monastic cell)** में ज़मीनी स्तर से 40 सेमी की गहराई पर 16.7 सेमी व्यास और 15 सेमी ऊँचाई का एक **गोलाकार बरतन** मला।
- घड़े का मुँह बाहर की तरफ एक उथले घड़े से और अंदर की तरफ एक टूटे हुए कटोरे के आधार से ढँका हुआ था तथा इसमें औसतन 2.3 ग्राम वज़न वाले 3730 सक्िके थे।
- पुरातत्वविदों का नषिकर्ष है कसिभी सक्िके, जो देखने में समान हैं तथा सीसे से बने हैं, जिनके अग्र भाग पर हाथी का प्रतीक और पश्च भाग पर उज्जैन का प्रतीक है, वे स्तर ग्राफिकल व टाइपोलॉजिकल अध्ययनों के आधार पर **इक्ष्वाकु काल** (तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी) से संबंधित हैं।
- मलिन वाली अन्य कलाकृतियाँ:
 - खुदाई के दौरान पत्थर और काँच के मोती, शंख की चूड़ियों के टुकड़े, प्लास्टर की आकृतियाँ, टूटी चूना पत्थर की मूर्तियाँ, खलौना गाड़ी के पहिये, लोहे की कीलें व **मटिटी के बरतन** सहित कई अन्य मूल्यवान सांस्कृतिक पुरावशेष एवं संरचनात्मक अवशेष भी पाए गए।

■ पूर्व उत्खनन:

- फणीगरिमें, उत्खनन क्रमानुसार सात चरणों तक कथिा गया।
 - फणीगरिमें इन उत्खननों से एक **महासतूप**, अर्द्धवृत्ताकार **चैत्य गृह**, मन्नत सतूप, स्तंभों वाले मण्डली हॉल, **वहिर**, विभिन्न स्तरों पर सीढ़ियों वाले मंच, अष्टकोणीय स्तूप चैत्य प्राप्त हुए।
 - एक **24-स्तंभों वाला मंडप**, एक गोलाकार चैत्य, और **टेराकोटा मोती**, अर्द्ध-कीमती मोती, लोहे की वस्तुएँ, शंख व चूड़ी के टुकड़े, **सक्िके**, महीन चूने की आकृतियाँ, **ब्राह्मी लेबल शिलालेख** तथा एक पवतिर ताबूत अवशेष सहित अन्य सांस्कृतिक वस्तुएँ भी मिलीं।
 - सभी सांस्कृतिक वस्तुएँ पहली शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ई.पू. तक की बताई जा सकती हैं।



//

■ फणीगरी गाँव का महत्त्व:

- फणीगरी गाँव हैदराबाद में **मुसी नदी** की सहायक नदी **बकिकेरू नदी** के बाएँ तट पर स्थित है।
- यह उत्तर से दक्षिण को जोड़ने वाले **प्राचीन व्यापार मार्ग (दक्षिणापथ)** पर पहाड़ी की चोटी पर स्थित **महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठों** में से एक है।
- **व्युत्पत्तशास्त्र (Etymologically)** के अनुसार, फणीगरी गाँव का नाम गाँव के उत्तरी किनारे पर स्थित एक पहाड़ी के आकार से लिया गया है, जिसका आकार **साँप के फन** के समान है।
- संस्कृत में फणी का अर्थ है साँप और गरी का अर्थ है पहाड़ी।
- यह गाँव पूर्व/आद्य-ऐतहासिक, प्रारंभिक ऐतहासिक, प्रारंभिक मध्ययुगीन और **आसफ जाही काल (वर्ष 1724-1948)** के नवासियों के अधिग्रहण में था।
- इस गाँव में 1000 ईसा पूर्व से 18वीं शताब्दी के अंत तक जीवन था।
- यह आंध्र प्रदेश के वकिसति बौद्धमठ **अमरावती** और **वजियपुरी (नागारजुनकोंडा)** के मठों से भी पूर्व का है।
- फणीगरी के प्रारंभिक ऐतहासिक स्थल को **पहली बार नजाम के काल** के दौरान खोजा और संरक्षित किया गया था तथा इसकी खुदाई वर्ष 1941 से वर्ष 1944 तक **श्री खाजा महामद अहमद** द्वारा की गई थी।

■ क्षेत्र में अन्य बौद्ध स्थल:

- फणीगरी के पास कई बौद्ध स्थल हैं, जैसे **वर्द्धमानुकोटा, गजुला बंदा, तरुमलगरी, नगरम, सगिराम, अरावापल्ली, अय्यावरपिल्ली, अरलागड्डागुडेम** और **येलेश्वरम**।

सकिकों का स्तरिक (Stratigraphical) तथा प्रतीकात्मक (Typological) अध्ययन:

ये सक्कों के कालानुक्रमिक और सांस्कृतिक संदर्भ को समझने के लिये मुद्राशास्त्र (सक्कों का अध्ययन) में उपयोग की जाने वाली वधियाँ हैं।

■ **स्तरिक अध्ययन:**

- इस वधि में उस **परत या स्तर** का अध्ययन करना शामिल है, जिसमें पुरातात्विक उत्खनन के दौरान **सक्के पाए जाते** हैं।
- इसमें स्तरों या परतों का विश्लेषण करके, शोधकर्त्ता एक ही परत में पाए गए अन्य कलाकृतियों की तुलना **मेंसक्कों की सापेक्ष आयु** निर्धारित कर सकते हैं।
- इससे सक्कों के **कालानुक्रमिक क्रम को स्थापित** करने और किसी स्थल के इतिहास को समझने में सहायता मिलती है।

■ **प्रतीकात्मक अध्ययन:**

- प्रतीकात्मक **सक्कों का** उनकी **भौतिक विशेषताओं**, जैसे डिज़ाइन, धातु संरचना, आकार और शिलालेखों के आधार पर **वर्गीकरण** है।
- इन विशेषताओं की तुलना करके, मुद्राशास्त्री सक्कों को उनके **प्रकार और उपप्रकारों** में समूहित करते हैं।
- प्रतीकात्मक अध्ययन सक्कों की **उत्पत्ति**, **ढलाई** की विशेषता और **प्रचालन अवधि (Period Of Circulation)** की **पहचान करने** में सहायक है।

इक्ष्वाकु काल के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

■ **परिचय:**

- **इक्ष्वाकु राजवंश**, जिसका नाम प्रसिद्ध **राजा इक्ष्वाकु** के नाम पर रखा गया, तीसरी ईस्वी चौथी शताब्दी ईस्वी के बीच दक्षिण भारत में फला-फूला।
- इक्ष्वाकुओं का ज्ञान मुख्यतः शिलालेखों, सक्कों एवं **पुरातात्विक उत्खनन** से प्राप्त होता है।
- साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि राजवंश का उदय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास **वजियपुरी क्षेत्र** (आधुनिक बेल्लारी जिला, कर्नाटक) में हुआ था।

■ **वसितार एवं सुदृढीकरण:**

- इक्ष्वाकु **राजा कान्हा** (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) के अधीन प्रमुखता से उभरे, जिन्होंने अपने क्षेत्र का उल्लेखनीय रूप से वसितार किया।
- कान्हा की वसितार क्षेत्र में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से शामिल थे, जिससे एक **दुर्जेय क्षेत्रीय शक्ति स्थापित** हुई।

■ **सांस्कृतिक एवं आर्थिक योगदान:**

- राजवंश ने संकल्प रूप से **बौद्ध धर्म** को संरक्षण दिया, जिससे **कंगनहल्ली तथा शंकरम** जैसे शानदार **स्तूपों** एवं **मठों** का निर्माण हुआ।
- बौद्ध प्रतीकों एवं क्षेत्रीय देवताओं की विशेषता वाले **इक्ष्वाकु सक्के** इस युग के दौरान **व्यापक रूप से प्रसारित** हुए थे।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न. भारत के इतिहास के संदर्भ में, 'कुल्यावाप' तथा 'द्रोणवाप' शब्द क्या निर्दिष्ट करते हैं?

- (a) भू-माप
- (b) विभिन्न मौद्रिक मूल्यों के सक्के
- (c) नगर की भूमिका वर्गीकरण
- (d) धार्मिक अनुष्ठान

उत्तर: (a)

प्रश्न. मध्यकालीन भारत में, शब्द "फणम" किस निर्दिष्ट करता था?

- (a) पहनावा
- (b) सक्के
- (c) आभूषण
- (d) हथियार

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. आप इस विचार को, कि गुप्तकालीन सक्काशास्त्रीय कला की उत्कृष्टता का स्तर बाद के समय में नतिांत दर्शनीय नहीं है, किस प्रकार

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/kshvaku-period-coins-found-in-telangana>

